International Journal of Jyotish Research: 2020; 5(1): 23-27

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2020; 5(1): 23-27
© 2020 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 20-04-2020
Accepted: 19-05-2020

डॉ. बिपिन कुमार
विषय विशेषज्ञ ज्योर्तिविज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ,
उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. बिपिन कुमार
विषय विशेषज्ञ ज्योर्तिविज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ,
उत्तर प्रदेश, भारत

विवाह मुहूर्त : एक अनुशीलन

डॉ. बिपिन कुमार

सार
विवाह भारतीय जनजीवन में गृहस्थ जनजीवन का आधार है। इसका समय निर्धारण मुहूर्त के आधार पर होता है भारतीय ज्योतिष के मुहूर्त ग्रन्थो में विवाह के काल निर्धारण के स्पष्ट नियम उल्लिखित हैं इस शोध पत्र में विवाह, वर कन्या वरण, वधू प्रवेश और द्विरागमन के मुहूर्त संग्रहीत हैं।

कूट शब्दः मेलापक, नक्षत्र शुद्धि, योग विचार, गान्धर्व विवाह, लोकाचार, वेदिका निर्माण, स्तम्भ आरोपण

प्रस्तावना
विवाह दो आत्माओं का पवित्र संयोग है। इसे पाणिग्रहण, उपयम और परिणय आदि भी कहते है इस संस्कार में दो प्राणी अपने अलग–अलग अस्तित्व को समाप्त कर एक सम्मिलित इकाई का निर्माण करते हैं, इसमें स्त्री–पुरुष रुपी दो पहिये गृहस्थ जीवन के रथ को प्रगति पथ पर चलाते है। सनातन धर्म में विवाह संस्कार के माध्यम से चारो पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का विधान बताया है। वामनपुराण में कहा गया है कि धर्म, अर्थ और काम की प्राप्ति अन्यत्र कही सम्भव नही है इसलिए शीघ्र गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करना चाहिये।

धर्मार्थ काम सम्प्राप्तिः परत्रेह न शोभनम् । एष तद्देशतः प्राक्तो गृहस्थाश्रमः उत्तमः।। [1]

मनुस्मृति के अनुसार विवाह के 8 प्रकार है – 1.ब्राह्म, 2.दैव, 3.आर्ष, 4.प्राजापत्य, 5.आसुर, 6.गान्धर्व, 7. राक्षस, और 8.पैसाच।

ब्राह्मै दैवस्तथा चार्षः प्राजापतस्यतथासुरः, गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचाष्टोऽधम।: [2]

इसमे ब्राह्म विवाह श्रेष्ठतम स्वीकार किया गया है जिसमे कन्या का पिता विद्वान् एवं शीलवान वर को स्वयं बुलाकर वैदिक मन्त्रात्मक विधि से द्रव्य दक्षिणा सहित कन्या दान करता है। प्राजापत्य, दैव और आर्ष विवाह को श्रेष्ठ कहा गया है। गान्धर्व विवाह मध्यम है शेष आसुर, राक्षस एवं पैसाच विवाह अधम एवं निकृष्ट है।
विवाह के पूर्व वर और कन्या के ग्रह नक्षत्रों के आधार पर मेलापक करना भी आवश्यक है। गुण मेलापक हेतु जन्म नाम के राशि का ही विचार करना चाहिये। पुकार नाम, उल्लाप नाम अथवा पंजीकृत नाम से ग्रह मेलापक नही करना चाहिये। जैसा कि कहा गया है

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रह गोचरे, जन्ममराशि प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।

ग्रह मेलापक में वर और कन्या के जन्म राशि के नक्षत्र के आधार पर विचार किया जाता है। इसमें अष्टकूट–वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट और नाड़ी का अध्ययन करना चाहिये। जैसा कि कहा गया है :–

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्, गणमैत्रं भकूटं च नाड़ी चैते गुणधिका [3]

इनमे वर्ण का 1 गुण, वश्य के 2 गुण, तारा के 3 गुण, योनि का 4, ग्रहमैत्री का 5, गण का 6, भकूट का 7 और नारी का 8 गुण होता है। इस प्रकार आठों का योग करने पर कुल 36 गुण हुये। इनमें1–16 गुणैक्य होने पर निन्दित, 16–20 तक मध्यम, 20–30 तक श्रेष्ठ और 30 से अधिक होने पर उत्तमोत्तम होता है :–

गुणैः षोडशभिर्निन्द्यं मध्यमा विंशतिस्तथा, श्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत् परतस्तूत्तमोत्तमम्।

मास शुद्धि

माघे धनवती कन्या फाल्गुने सुभगा भवेत्। वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यन्तवल्लभा।। [4]

आषाढ़े कुलवृद्धिः स्यादन्ये मासाश्च वर्जिताः। मार्गशीर्षमपीच्छन्ति विवाहे केपि कोविदाः।। [5]

मुहूर्तगणपति के विवाह प्रकरण मे उल्लेख है कि कन्या का विवाह माघ मास में करने से धनवती, फाल्गुन में सौभाग्यती ,वैशाख एवं ज्येष्ठ में पति –प्रिया होती है। आषाढ़ में विवाह करने से कुल की वृद्धि करने वाली होती है और अन्य मास (चैत्र,श्रावण ,भाद्रपद ,अश्विन ,कार्तिक व पौष)विवाह में वर्जित है। किसी विद्वान् के मतानुसार मार्गशीर्ष में विवाह शुभ होता है।

> मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगेऽपि रवौ त्रिलवे शुचेः।
> अलिमृगाजगते करपीडनं भवति कार्तिकपौषमधुष्वपि।। [6]

सूर्य संक्रमण की मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष, मेष और मिथुन राशियों के चान्द्रमासों में विवाह लग्न शुभ होती है। मिथनुराशिगत सूर्य में आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से दशमी तक, वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक मास में, मकर के सूर्य में पौष मास में, मेष के सूर्य में चैत्र चान्द्रमास में भी विवाह लग्न होती है।

मुहूर्तगणपति का मत है कि मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक, मकर, कुम्भ राशिगत में सूर्य होने पर विवाह श्रेष्ठ होता है। मिथुनस्थ सूर्य में विष्णुशयन से पूर्व शुभ है। वैशाख, फाल्गुन, माघ और ज्येष्ठ मास विवाह के लिए उत्तम और मार्गशीर्ष (अगहन) मध्यम तथा अवशिष्ट मास अधम होते है। वृश्चिक, मकर व मेषस्थ सूर्य में कार्तिक पौष एव चैत्र में विवाह करना भी शुभ होता है। धनु के सूर्य में मार्गशीर्ष (अगहन), मीन के सूर्य में फाल्गुन मास में विवाह अशुभ होता है क्योंकि यज्ञोपवीत और विवाह आदि शुभ कार्यो में सौर मास ही ग्राह्य है। [7]

नक्षत्र शुद्धि

> रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वातिमृगौ मघा। अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मंगलप्रदा।। [8]

रोहिणी, तीनों उत्तरा (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तरा षाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद), रेवती ,मूल स्वाति, मृगशिरा ,मघा, अनुराधा व हस्त ग्यारह नक्षत्र विवाह में शुभ फलदायी है।

ग्यारह नक्षत्र के अतिरिक्त चार नक्षत्र (अश्विनी ,चित्रा,श्रवण एवं धनिष्ठा)भी शुभ माने जाते है।

> त्रिषु त्रिषूत्तरादिषु। स्वाती मृगशिरसि रोहिण्यां वा। [9]

पारस्कर गृह्यसूत्र में तीन तीन उत्तरादि नक्षत्रों में अर्थात् उत्तराफाल्गुनी हस्त चित्रा, उत्तराषाढा़, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी अथवा स्वाती, मृगशिरा और रोहिणी में विवाह करने का मुहूर्त बताया गया है।

> सीतोढ़ा पूर्व फाल्गुन्या नो लेभे शमतो न सत् [10]

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र मे सीता जी का विवाह हुआ था ,और उन्हे शान्ति नही मिली अतः पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र मे विवाह अच्छा नही होता। ज्योर्तिनिबन्ध मे मघा और मूल के प्रथम चरण तथा रेवती के चतुर्थ चरण में विवाह का निषेध है–

मघायां प्रथमे पादे मूलस्य प्रथमे तथा, रेवत्याश्च चतुर्थेशे विवाहः प्राणनाशनः।

निषिद्व तिथिः षष्ठी, अमावस्या, अष्टमी, रिक्ता(4,9,14), त्रयोदशी और कृष्ण पक्ष की अन्तिम पांच तिथि व शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के अतिरिक्त सभी तिथियॉ शुभ है।

वार शुद्धिः सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार श्रेष्ठ हैं रवि व शनिवार मध्यम हैं मंगलवार त्याज्य हैं।

> वाराः प्रशस्ताः शुभखेचराणां सुर्यार्किवारौ खलु मध्यमौ तु।
> त्याज्याः सदा भूमि सुतस्य वाराः कामार्कतिथ्योरपि तौ प्रदोषौ। (वशिष्ठ)

योग विचारः विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, वज्र, व्यतीपात, परिघ, वैधृति,व्याघात, और हर्षण त्याज्य हैं।

करण शुद्धिः विवाहे करणःसर्वे शोभना विष्टिवर्जिताः

(वृहस्पति)

विष्टिकरण को त्यागकर सभी करण विवाह हेतु शुभ हैं।

वर्जित कालः होलाष्टक, पितृपक्ष, मलमास, धनुस्थ और मीनस्थ सूर्य,जन्मतिथि, जन्ममास और जन्मनक्षत्र त्याज्य हैं।

वर्ज्य दोषः लत्ता, पात, युति, वेध (पंचशलाका, सप्तशलाका), जामित्र, बुध पंचक, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य एवं दग्धा तिथि ये दस दोष विवाह में वर्जित है।

सर्वत्र वर्जित विवाह के दोषः पंचांग शुद्धि का अभाव, सूर्योदयास्त या गुरु शुक्रास्त विचार, संक्रान्ति दिन, पाप षडवर्ग में लग्न होना, विवाह लग्न में छठें शुक्र व अष्टम में मंगल, त्रिविध गण्डान्त, कर्तरी दोष, त्रिकगत चन्द्रमा, वर वधू की राशि से अष्टम द्वादश लग्न दोष, नक्षत्रों की विषघटी दिन के अनुरुप, निन्दित मुहूर्त, पाप ग्रह वार दोष, लत्ता दोष, ग्रहण नक्षत्र, उत्पात नक्षत्र, पापविद्ध नक्षत्र, पापयुक्त नक्षत्र, पापनवांश, मृत्युबाण(सूर्यगतांश 1, 10, 19, 28) व क्रान्तिसाम्य विवाह में वर्जित है।

गुरू–शुक्र अस्तः गुरू शुक्र के अस्त होने के दो दिन पूर्व और उदय होने के दो दिन पश्चात तक का समय।

ग्रहण कालः ग्रहण दोष के समय एक दिन पहले व तीन दिन पश्चात का समय अर्थात् कुल पांच दिन विवाह हेतु त्याज्य है।

विशेष वर्ज्यः संक्राति, मासांत, अयन प्रवेश, गोल प्रवेश, युति दोष, पंचशलाका वेध दोष, मृत्यु बाण दोष, सूक्ष्म क्रांतिसाम्य, सिंहस्थ गुरू, सिंह नवांश में तथा नक्षत्र गंडांत विवाह हेतु त्याज्य है।
जैसा कि मुहूर्तचिन्तामणिकार ने शुभ कार्यो हेतु वर्ज्य बताया है–

> जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपातभद्रावैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयद्र्धी।
> न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्द्धपात विष्कम्भवज्रघटिकात्रयमेव वर्ज्यम्।
> परिघार्धं पंचशूले षट् च गण्डातिगण्डयोः व्याघाते नव नाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु।। [11]

अपना जन्मनक्षत्र, जन्ममास, जन्मतिथि, व्यतिपात योग, भद्रा, वैधृति योग अमावस्या तिथि, पिता और माता के श्राद्ध दिन (मृत्यु दिन), तिथि क्षय, तिथिवृद्धि, क्षयमास, अधिमास, कुलिक(गुलिक) नामक मुहूर्त, प्रहरार्ध एवं पात काल का शुभ कार्यो में परित्याग करना

चाहिये। विष्कम्भ, वज्र योगों की 3–3 घटी का परित्याग करना चाहिये।
परिघ योग का आधा, शूल योग की 5 घटी, गण्ड और अतिगण्ड की 6घटी, व्याघात की 9 घटी सभी प्रकार के शुभ कार्यों में वर्जित है।

गान्धर्व (प्रेम) विवाह मुहूर्त

गान्धर्व आदि विवाह के लिये किसी विशेष मुहूर्त की अपेक्षा नही रहती। इसमें केवल नक्षत्र शुद्धि का विधान बताया गया है। इसलिये गान्धर्व, आसुर, पैशाच एवं राक्षस विधि के विवाह में केवल नक्षत्र शुद्धि का विचार करना चाहिये। जैसा कि मुहूर्तचिन्तामणि में कहा गया है–

> गान्धर्वादिविवाहेऽर्काद्वेदनेत्रगुणेन्दवः,
> कुयुगांगाग्निभूरामस्त्रिपद्यामशुभाः शुभाः।। [12]

गान्धर्व, आसुर, पैशाच आदि विवाहों में त्रिपदीय चक्र के अनुसार सूर्य नक्षत्र से 4 नक्षत्र अशुभ, 2 शुभ, 3 अशुभ, 1 शुभ , 1 अशुभ, 4 शुभ, 6 अशुभ, 3 शुभ, 1 अशुभ , 3 शुभ नक्षत्र होते है। इन्ही शुभ नक्षत्रों में गान्धर्व आदि विवाह करना चाहिये।

विवाह पूर्व लोकाचार क्रियाविधि का मुहूर्त

मुहूर्तचिन्तामणि के अनुसार वर–कन्या के चन्द्र बल को देखकर अथवा विवाह हेतु बताये गये नक्षत्रों मे प्रयुक्त होने वाले अन्न(गेहूँ, चावल, दाल) आदि को साफ करना एवं पीसना, गृह एवं आंगन की सफाई और साज सज्जा करना, मंगल कलश वेदिका और मण्डप की स्थापना करना चाहिये। विवाह से पूर्व के 3, 6, 9 दिन उक्त कार्य नही करने चाहिये।
इस प्रकार विवाह के पूर्व 1, 2, 4, 5, 7 ,8 आदि दिनों में मण्डप कार्य का आरम्भ करना चाहिये। [13] मुहूर्तगणपति के अनुसार–

> कार्यं विवाहकार्यांगविवाहोदितभादिभिः। विलम्बंच विधुं हित्वा त्रिषष्ठनवमं दिनम्।।
> विशाखा भरणी चित्रा ज्येष्ठाख्यामाश्विनी शतम्।
> आर्द्राचतुष्टयं हित्वा कुर्याद् वैवाहिकं विधिम्।।
> हेरम्बपूजनं तैलं सकलं चांकुरार्पणम्। भूषणं कंकणाद्यंच वेदिकामण्डपादिकम्।। [14]

अर्थात् वैवाहिक कार्य विवाह मे वर्णित तिथि नक्षत्रादि में, बली चन्द्रमा में, तीसरे, छठे व नवें दिन को त्यागकर अन्य दिनों में, विशाखा, भरणी, चित्रा, ज्येष्ठा, अश्विनी, शत्भिषा, आर्द्रा, पुर्नवसु , पुष्य और अश्लेषा नक्षत्र को त्यागकर गणपति पूजन, तेल, अंकुरार्पण, कंकणादि आभूषण धारण, वेदिका निर्माण, मण्डप छादन आदि का समस्त कार्य करना चाहिये।

तेल आदि लेपन की दिन संख्याः

> मेषादिराशिजातानां कुर्यातैलादिलेपनम्। शैलदिग्बाण सप्तांग इषुपच्चेषवः शराः।
> बाणशैलास्त्रयश्चैव क्रमात् कैश्चदितीरितम् ।। [15]

तेल लगाने की दिन संख्या – मेषादि राशि वालों को क्रम से विवाह के पूर्व अर्थात् मेष राशि को सात दिन, वृष को दस, मिथुन को पॉच, कर्क को सात, सिंह को छ दिन, कन्या को पॉच, तुला को पॉच , वृश्चिक को पॉच, धनु को पॉच, मकर को पांच , कुम्भ को सात और मीन राशि वालों को तीन दिन तेल लगाने को किसी किसी ने बताया है।

विवाह वेदिका निर्माण मुहूर्त

> चतुरत्रां करोच्छायां चतुर्हस्तां सुवेदिकाम्।
> वेशमनो वामभागे च कुर्यात् स्तम्भोपशोभिताम्।। [16]

घर के बायें भाग में खम्भों से सुसज्जित चार हाथ चौकोर और एक हाथ ऊॅची सुन्दर वेदि का निर्माण करना चाहिये।

विवाह वेदिका में स्तम्भ आरोपण का मुहूर्त

> ऐशान्यां स्थापयेत् स्तम्भं सिंहादित्रिभगे रवौ। वृश्चिकादित्रिभे वायोर्नैऋत्यां कुम्भतस्त्रिभे। वृषात्त्रये तथाग्नेयां स्तम्भखातस्थैव हि।। [17]

सिंह, कन्या, तुला के सूर्य में प्रथम ईशान कोण में , वृश्चिक, धनु, मकर में वायव्य कोण में कुम्भ, मीन, मेष में नैऋत्य और वृष, मिथुन, कर्क के सूर्य में अग्नि कोण में स्तम्भ आरोपण एवं इसी प्रकार का गड्ढा भी करना चाहिये।

विवाह के उपरान्त मण्डप उद्वास(उठाने) का मुहूर्त

> मण्डोपद्वासनं षष्ठं हित्वा कुर्यात् समेऽहनि। पंचमे सप्तमे वापि शुभर्क्षे शुभवासरे।। [18]

विवाह से छठा दिन छोड़कर सम दिन (2, 4, 8, 10, 12, 14, 16, 18, 20, 22, 24, 26, 28, 30) में, शुभ नक्षत्र(रोहिणी,अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, तीनो उत्तरा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, पुर्नवसु, अनुराधा और स्वाती), शुभ वार(सोमवार, बुध, गुरु एवं शुक्रवार) में और 5वे या 7वें दिन भी मण्डप विसर्जित होना शुभ होता है।

वर–वरण, कन्या–वरण मुहूर्त

वर वरण को वररक्षण, वरक्षा, टीका, रोंका आदि कहते हैं, इसमे कन्या का पिता या भाई वर का तिलक लगाकर विवाह का वागदान (कन्या देने का वचन) देते हैं। कन्या वरण मे वर की माता व बहनें उत्तम वस्त्र, फल, मिष्ठान, आभूषण आदि कन्या को देती हैं। आजकल इसमें वर के द्वारा कन्या को मुद्रिका भी पहनाई जाती है।

ग्राह्य नक्षत्र

> विश्वस्वाती वैष्णवपूर्वात्रय मैत्रेर्वस्वाग्नेयैर्वा करपीडोचितऋक्षैः।
> वस्त्रालंकारादिसमेतैः फलपुष्पैः सन्तानोष्यादौ स्यादनु कन्यावरणं हि।।
> धरणिदेवोऽथवा कन्याकासोदरः शुभदिने गीतावाद्यादिभिः संवृतः।
> वरवृत्तिं वस्त्रयज्ञोपवीतादिना ध्रुवयुतैर्वुपूर्वात्रयैराचरेत्। [19]

मुहूर्तचिन्तामणिकार का मत है कि कन्यावरण उत्तराषाढ़ा, स्वाति, श्रवण, तीनो पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा पूर्वाभाद्रपद), अनुराधा, धनिष्ठा और कृतिका में करना चाहिए जबकि वरवरण ध्रुवसंज्ञकनक्षत्र (उत्तरात्रय, रोहिणी), कृतिका और पूर्वात्रय में करना चाहिए। कन्या के भाई, पिता या पुरोहित गीत वाद्य आदि मांगलिक विधि के साथ वस्त्र, यज्ञोपवीत, नारियल, सुपारी और आभूषण, उपहार आदि देकर वर का वरण किया जाता है।

ग्राह्य तिथिः
शुक्ल पक्ष– 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, और 13 तिथियां ग्रह्य हैं।
कृष्ण पक्ष– 1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12 तिथियां ग्रह्य है।

वार शुद्धिः शुक्र, चन्द्र, गुरु और बुधवार श्रेष्ठ हैं, मंगलवार व शनिवार मध्यम हैं, शेष रविवार अशुभ है।

योग विचारः विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, वज्र, व्यतीपात, परिघ, वैधृति, व्याघात, और हर्षण त्याज्य हैं।

वर्जित कालः होलाष्टक, पितृपक्ष, मलमास, घनुस्थ और मीनस्थ सूर्य।

गुरू–शुक्र अस्तः गुरू शुक्र के अस्त होने के दिन और उदय होने तक का समय।

ग्रहण कालः ग्रहण के एक दिन पूर्व व तीन दिन पश्चात का समय अर्थात् कुल पांच दिन।

विशेष वर्ज्यः संक्रति, मासांत, अयन प्रवेश, गोल प्रवेश, युति दोष, पात दोष, मृत्यु बाण दोष, सूक्ष्म क्रांतिसाम्य, नक्षत्र गंडांत।

मुहूर्त की अवधिः सूर्योदय से सूर्यास्त के तीन घंटे बाद तक का समय।

वधूप्रवेश मुहूर्त्त विचार
प्राचीन काल में विवाह के सोलह दिन के अन्दर या प्रथम, तृतीय, पंचम आदि विषम वर्षों में वधू प्रवेश होता था। एक मास के अन्दर विषम दिनो मे, एक वर्ष के मध्य विषम मास मे तथा 1 वर्ष के पश्चात विषम वर्षों में करना चाहिये। पॉच वर्ष के पश्चात् वधू प्रवेश मे स्वेच्छा से साधारण दिन शुद्धि देखकर विचार करना चाहिये। ज्योतिर्निबन्ध में लिखा है कि–

> बधूप्रवेशने कार्यं पंचमे सप्तमें दिने। नवमे च शुभे वारे सुलग्ने शशिने बले।।

जब बाल विवाह होता था तो वधू प्रवेश विलम्ब से होता था। आजकल विवाह के साथ ही वधूप्रवेश विधान है।

> ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमद्यानिले। वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्के बुधे परैः। [20]

धुवसंज्ञकनक्षत्र (उत्तरात्रय,रोहिणी), क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र (अश्विनी, हस्त, पुष्य, अभिजित), मृदुसंज्ञकनक्षत्र (अनुराधा, रेवती, मृगशिरा, चित्रा, पुष्य, अभिजित), श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा और स्वाती नक्षत्रों में वधू प्रवेश करना चाहिए। रिक्ता तिथि (4, 9, 14) और रविवार, मंगलवार, बुधवार को वधू प्रवेश वर्जित है।

> हस्तत्रये ब्रह्मयुगे मघायां पुष्ये धनिष्ठाश्रवणोत्तरेषु।
> मूलाऽनुराधाहयरेवतीषु पुष्येषु लग्नेषु वधू प्रवेशः।। [21]

आचार्य रामचन्द्र पाण्डेय का मत है कि विवाह के उपरान्त चैत्र मास आने से पूर्व अर्थात् वर्षान्त तक (फाल्गुन मास तक) कन्या को पतिगृह में अवश्य भेज देना चाहिये, तथा पतिगृह में स्थित वधू को प्रथम ज्येष्ठ, आषाढ़, पौष, अधिमास एवं क्षय मास में अपने पिता के गृह वापस आ जाना चाहिये प्रथम यात्रा में ही इन मासो का विचार किया जाता है।

द्विरागमन मुहूर्त
विवाह के उपरान्त वधू अपने पति के घर में नव वधू प्रवेश होने के बाद लौटकर अपने पिता के घर आने के बाद पुनः दुबारा पति के घर आगमन को द्विरागमन कहा जाता है इसे स्थानीय भाषा में 'दोंग' भी कहा जाता है। विषम वर्षों या मासों में इसका विधान करना चाहिए।

> चरेदथौजहायने घटलिमेषगे रवौ, रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे। नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्नके, द्विरागमं लघुध्रुवे चरेन्नपे मृडूदुनि।। [22]

विवाह के 1 वर्ष बाद विषम वर्षो में, कुम्भ, मेष, वृश्चिक राशि के सूर्य में, सूर्य और गुरू की शुद्धि के साथ शुभ ग्रह के वार (सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार), मिथुन, मीन, कन्या, तुला और वृष लग्नों में किसी एक में, लघुसंज्ञक–अश्विनी, हस्त, पुष्य और अभिजित, ध्रुवसंज्ञक (उतरात्रय, रोहिणी), चरसंज्ञक (श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा पुनर्वसु और स्वाती), मूल नक्षत्रों में द्विरागमन मुहूर्त शुभ होता है। ज्योतिर्विद काशिनाथ भट्टाचार्य ने इससे सहमति रखते हुए शीघ्रबोध में कहा है–

> धातृयुग्मं हयो मैत्रं श्रुतियुग्मं करत्रयम्। पुनर्वसुद्वयं पूषा मूलं चाप्युत्तरात्रयम्।।
> विषमे वत्सरे मासे मार्गे मेषे च फाल्गुने । मकरे मिथुने मीने लग्ने कन्यातुलाधनुः।।
> भौमार्किवर्जिता वारा गृह्यन्ते च द्विरागमे। षष्ठी रिक्ता द्वादशी च अमावास्या च वर्जिताः।। [22]

विवाह के दिन से 2, 3, 4, 5, 6, 9, 10, 12, 16 दिन अथवा विषम वर्षो में द्विरागमन शुभ है।

ग्राह्य नक्षत्रः अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, उ,.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उ,भा., रेवती।

ग्राह्य तिथिः 1, 2, 3, 5, 7, 8, 10, 11, 13 और 15 तिथियां ग्रह्य हैं।

वार शुद्धिः सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार शुभ हैं।

योग विचारः विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, वज्र, व्यतीपात, परिघ, वैधृति,व्याघात, और हर्षण त्याज्य हैं।

करण शुद्धिः विष्टि करण (भद्रा) को छोड़कर सभी चर करण शुभ तथा स्थिर करण मध्यम है।

सूर्य राशिः केवल मेष, वृश्चिक, कुंभ राशि के सूर्य से सम्बन्धित चान्द्रमास में द्विरागमन शुभ है।

ग्राह्य लग्नः वृष, मिथुन, कन्या, तुला और मीन लग्न शुभ है।

वर्जित कालः होलाष्टक और देव शयन काल मध्यम है। जब कि पितृपक्ष, मलमास, धनुस्थ और मीनस्थ सूर्य वर्जित है।

गुरू–शुक्र अस्तः गुरू शुक्र के अस्त होने के दो दिन पूर्व और उदय होने के दो दिन पश्चात तक का समय, सन्मुख या दाहिने शुक्र होने पर द्विरागमन निषिद्ध है।

ग्रहण कालः जिस दिन ग्रहण पड़ता हो, उस दिन पूरे दिन का समय वर्जित किया गया है।

विशेष वर्ज्यः संक्रांति, मासांत, अयन प्रवेश, गोल प्रवेश, युति दोष, पंचशलाका, वेध दोष, मृत्यु बाण, सूक्ष्म क्रांतिसाम्य, नक्षत्र गंडांत मे द्विरागमन निषिद्ध है।

दीपावली दोषापवादः दीपावली के दिन द्विरागमन सर्वदा शुभ होता है। सिंहस्थ गुरु व सन्मुख शुक्र या गुरु युक्त सिंहस्थ शुक्र होने पर भी दीपावली के दिन पति के घर में वधू का प्रवेश शुभ होता है। जैसा कि मुहूर्त गणिपतिकार ने कहा है कि–

> सिंहस्थे व गुरौ शुक्रे सन्मुखे संगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पति मन्दिरे।। [23]

मुहूर्त की अवधिः सूर्योदय से मध्यरात्रि तक का समय।`

सन्दर्भ

1. वमनपुराण 15–55
2. मुस्मृति 3 –21
3. मुहूर्तचिन्तामणि विवाहप्रकरण 21
4. शीघ्रबोध, प्रथम प्रकरण–3
5. शीघ्रबोध, प्रथम प्रकरण–4
6. मुहूर्तचिन्तामणि, विवाहप्रकरण, 13
7. मुहूर्तगणपति–विवाह प्रकरण 123–126
8. शीघ्रबोध, प्रथम प्रकरण–2
9. पारस्कर गृह्यसूत्रम् प्रथमकाण्ड, चतुर्थी कण्डिका 6, 7
10. मुहूर्तगणपति विवाह प्रकरण 130
11. मुहूर्तचिन्तामणि शुभाशुभ प्रकरण 34 35
12. महूर्तचिन्तामणि– विवाह प्रकरण 95
13. महूर्तचिन्तामणि– विवाह प्रकरण 96
14. मुहूर्तगणपति– विवाह प्रकरण 264 –266
15. मुहूर्तगणपति – विवाहप्रकरण 267
16. मुहूर्तगणपति – विवाहप्रकरण 268
17. मुहूर्तगणपति – विवाहप्रकरण 269
18. मुहूर्तगणपति – विवाहप्रकरण 270
19. मुहूर्तचिन्तामणि–विवाहप्रकरण, 10–11
20. मुहूर्तचिन्तामणि–वधूप्रवेश प्रकरण 02
21. शीघ्रबोध, द्वितीय प्रकरण–80
22. मुहूर्तचिन्तामणि–द्विरागमन प्रकरण–1
23. शीघ्रबोध द्वितीय प्रकरण–1,2,3
24. मूहूर्तगणपति विवाह प्रकरण 282